फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 72 संख्याः 187 प्रभात जयपुर, रविवार 6 फरवरी, 2022 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

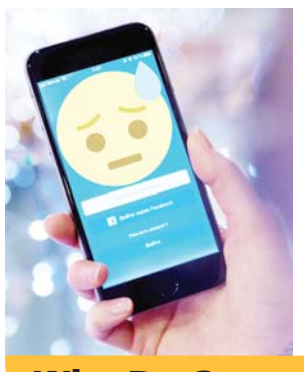

Why Do Some People Quit Facebook

You find interesting facts or information on facebook and before you know, your whole day is gone. I was addicted."

End-of-life Care

Minnie Mouse's New Pantsuit

Sweep Your BAE Off Their Feet

पश्चिम अफ्रीका में एक छोटा सा देश है बैनीन, जिसकी नोका झील में बसा है एक अनोखा गांव, गैनवी। अफ्रीका का लट्ठों पर बसा यह सबसे बड़ा गांव है। झील के बीच में लकड़ी के खंभों पर बने घरों में आज करीब 20,000 लोग रहते हैं। गांव बसने की भी एक रोचक गाथा है। सत्रहवीं सदी में अफ्रीका में पुर्तगालियों का ''स्लेव ट्रेड'' जोरों पर था। इसी समय टोफीनो नाम की एक जनजाति ने गुलाम बनाने वालों से बचने के लिए लेक नोका पर गांव बसा लिया। गुलाम बनाने वाले लोग फोन जनजाति के थे। वो अपने शत्रुओं को पकड़कर गुलामों के व्यापारियों को बेच दिया करते थे। फोन जनजाति के लोग झील को पवित्र मानते थे और झील पर युद्ध करना उनकी धार्मिक आस्थाओं के विरूद्ध था। इसलिए यह झील टोफीनो जनजाति के लिए अति सुरक्षित स्थान बन गई। अब 500 सालों में झील के ऊपर एक पूरी संस्कृति विकसित हो गई है। अब तो इस गांव में दुकानें, रैस्राँ, ब्यूटी पार्लर और स्कूल भी खुल गए हैं। गांव के लोग आय के लिए मछली पकड़ने व पर्यटन पर निर्भर हैं।

क्या यू.पी. में चुनावी दंगल केवल भाजपा व सपा के बीच ही है?

भाजपा के मीडिया मैनेजमैंट टीम की, यह ही दर्शाने की कोशिश है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5फरवरी। उत्तर प्रदेश के, सात चरणों में होने वाले चुनावी दंगल के पहले चरण में मात्र पाँच दिन बचे हैं। देश के इस सबसे बड़े राज्य, जिसे राष्ट्रीय सत्ता की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है, में अपनी सत्ता बरकरार रखने के लिये भाजपा भले-बुरे सभी तरीकों को काम में ले रही हैं।

10 फरवरी को होने वाले मतदान के पहले चरण में बेरोज़गारी, व आमदनी व नौकरियाँ खत्म होना, कोविड से हो चुकी मौतें तथा किसान-आंदोलन जैसे मुद्दे ज़ोर पर हैं, किन्तु हर संभव अवसर पर साम्प्रदायिक मुद्दे को उठाकर भाजपा इन सभी मुद्दों को निष्प्रभावी करने की कोशिश कर रही है। पहले चरण में, 11 जिलों की जिन 58 विधानसभा सीटों पर दाँव लगा हैं, वे भाजपा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

जन-आक्रोश दबा हुआ है, नज़र नहीं आ रहा, किन्तु हिचक और डर से यह आक्रोश स्वत: ही अभिव्यक्त हो रहा है। लोगों से कुछ देर तक बात की जाये, तो निश्चित रूप से उनका दबा हुआ आक्रोश फूटने लगता है तथा वो कहने लगते हैं- ''हमारे साथ धोखा हुआ है'' या ''योगी सरकार ने हमें और गरीब कर दिया।''

- इस को राष्ट्रीय मीडिया का भी पूर्ण समर्थन व सहयोग मिल रहा है।
- दो पार्टी की दौड़ साबित करके, भाजपा चाहती है कि, अंत में साम्प्रदायिक वातावरण बनाया जाये, जिससे हिन्दू मुस्लिम ध्रुवीकरण हो तथा हिन्दू भाजपा के पक्ष में आ जाऐं व मुस्लिम सपा की तरफ, और भाजपा जीत जाए।
- पर, यह प्रयास इस बार सफल होता नज़र नहीं आ रहा। बसपा तथा कांग्रेस के उम्मीदवार जमीन पर काफी असरदार नज़र आ रहे हैं और भाजपा का मनचाहा संतुलन शायद नहीं बन पायेगा।
- प्रथम मतदान 10 फरवरी को है तथा सभी तरफ से धुआंधार प्रचार चल रहा है। पर इस शोर-शराबे में एक बात तो निश्चित है कि, भाजपा पिछले चुनाव का नतीजा तो कतई दोहरा नहीं पायेगी।

रोज़ाना कमाने-खाने तथा फल-सब्जी आदि बेचकर अपनी आजीविका चलाने वाले लोग कहते हैं कि, उनकी दैनिक बिक्री आधी रह गई है।

हालाँकि, मीडिया-रिपोर्ट्स तो केवल भाजपा तथा एस.पी.-आर.एल.डी. गठबंधन पर ही केन्द्रित रहती हैं, लेकिन न तो बसपा को खारिज किया जा सकता है और न कांग्रेस को, क्योंकि दोनों की ही 2017 की अपेक्षा बेहतर स्थिति में उभरने की संभावनाएं हैं। ऐसा लगता है कि, भाजपा की मीडिया प्रबंधन टीमों का यह एक सुनियोजित एवं सोचा समझा प्रयास है कि, एस.पी.-आर.एल.डी. पर ही फोकस किया जाये, ताकि संभावित साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के लिये हिन्दू-मुस्लिम मुद्दे को उठाया जा सके। लेकिन बड़ी संख्या में लोगों से बात करने पर सामने आया है कि, भाजपा की ये कोशिशें उसे इच्छित परिणाम नहीं दे रही हैं क्योंकि अन्य पार्टियों को लेकर भी काफी उत्साह एवं चहल-पहल है।

इस जबरदस्त प्रचार-प्रसार की तह तक जाना बड़ा मेहनत का काम है, जिसके अन्तर्गत, राष्ट्रीय अखबार भाजपा और सपा के बीच सीधा मुकाबला बता रहे हैं, जबकि जमीन पर यह दिखाई नहीं दे रहा, क्योंकि अन्य दलों के उम्मीदवार भी आशा-प्रत्याशा से परिपूर्ण प्रतीत हो रहे हैं।

हालाँकि, समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने आज कहा कि, (राज्य सरकार के प्रति) उत्तर प्रदेश की जनता की नाराजगी को देखते हुए, इन चुनावों में एस.पी.-आर.एल.डी. गठबंधन को 403 विधानसभा सीटों में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पंजाब में कांग्रेस के नेता आपस में ज्यादा लड़ रहे हैं, बनिस्पत विपक्ष से

चन्नी के नाम की घोषणा की भारी संभावना होने से, ये लड़ाईयां और प्रखर हुईं

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5फरवरी। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी द्वारा, पंजाब के लिये पार्टी के मुख्यमंत्री उम्मीदवार की घोषणा किये जाने से एक दिन पहले पंजाब कांग्रेस की कमजोरियाँ सामने आ गई हैं। पार्टी नेतृत्व ने जी-23 नेता मनीष तिवारी तथा गुलाम नबी आज़ाद को स्टार प्रचारकों की सूची में शामिल नहीं किया है।

- कांग्रेस ने गुलाम नबी व मनीष तिवाड़ी के नाम को स्टार प्रचारक की सूची से हटाया।
- पंजाब की 40 प्रतिशत जनता हिन्दू है, अतः दोनों सैक्युलर नेताओं का नाम हटने से हिन्दू वोट पर असर पड़ेगा। गुलाम नबी पंजाब के प्रभारी रहे हैं तथा मनीष पार्टी का एक मात्र हिन्दू सांसद है।
- सिद्धू, जाखड़ व चन्नी की परस्पर विरोधी बयानबाजी भी घटने का नाम नहीं ले रही।

जहाँ, चुनाव-पूर्व के सर्वे सत्तारूढ़ कांग्रेस तथा अरविन्द केजरीवाल की आप के बीच कड़े संघर्ष की भविष्यवाणी कर रहे हैं, वहीं कांग्रेस, मुख्यमंत्री पद के तीन आकांक्षियों - चरणजीत सिंह चन्नी, नवजोत सिंह सिद्धू तथा सुनील जाखड़ के बीच चल रही अनबन के कारण अपनी स्थिति नहीं संभाल पा रही है। ये तीनों नेता एक-दूसरे पर कटाक्ष करने में लगे हुये हैं। चन्नी का कहना है कि, पिछले 100 दिन में उन्होंने जो काम किए हैं उनके आधार पर वे इस शीर्ष पद पर एक और अवसर पाने के हकदार हैं। सन् 2018 के बजरी खनन के केस में प्रवर्तन निदेशालय द्वारा की गई चन्नी के भतीजे भूपिन्दर सिंह हनी की गिरफ्तारी के बाद सिद्धू ने कहा कि, भ्रष्ट लोग, जैसे ''बजरी माफिया'' से जुड़े लोग, राज्य का विकास नहीं कर सकते। उन्होंने आगे कहा कि, केन्द्रीय नेतृत्व मुख्यमंत्री के रूप में किसी ''कमजोर व्यक्ति'' को आगे लाना चाहता है।

इसी बीच, जाखड़ ने कहा है कि, कैप्टन अमरिन्दर सिंह को हटाये जाने के बाद, वे इस पद के सर्वोत्तम दावेदार थे क्योंकि उन्हें 42 पार्टी विधायकों का समर्थन हासिल था, जबकि चन्नी के समर्थन में केवल दो विधायक ही थे। मतदान की तिथि, यानि 20 फरवरी में, मात्र एक पखवाड़े का समय बचा है, किन्तु इस समय भी ऐसा प्रतीत हो रहा है कि, राज्य कांग्रेस पार्टी के अंदर ही संघर्षरत है।

एक ऐसे राज्य में, जहाँ हिन्दू कुल मतदाताओं के 40 प्रतिशत हैं, आज़ाद और तिवारी जैसे नेताओं की गैर मौजूदगी भी पार्टी के लिये प्रतिकूल प्रभाव पैदा करती प्रतीत हो रही है। आज़ाद पार्टी के वरिष्ठतम नेताओं में हैं तथा पूर्व में वो राज्य के महासचिव प्रभारी भी रह चुके हैं। दूसरी तरफ, तिवारी पार्टी के एक मात्र हिन्दू सांसद हैं, जो आनन्दपुर साहिब सीट का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

20 दिन पहले गायब हुए टाइगर एस.टी.-13 का सुराग नहीं मिला

अलवर, 5 फरवरी (निसं)। सरिस्का सैंचुरी से 20 दिन पहले गायब हुए टाइगर एस.सी. 13 का अब तक कोई सुराग नहीं लगा है। अब वन विभाग ने टाइगर को ढूढ़ने वाले को इनाम देने की घोषणा की है। इनाम क्या होगा, यह तय नहीं है, लेकिन टाइगर को ढूंढ़ने के लिए विभाग ने 100 कर्मचारियों की टीम जंगल में उतार दी है। यह विभाग की आखिरी कोशिश है। इसके बाद भी यदि टाइगर नहीं मिला तो इसे अन्ततः लापता घोषित कर दिया जाएगा।

दरअसल सरिस्का में 14 जनवरी से टाइगर एसटी -13 गायब है। रेडार पर भी उसकी लोकेशन ट्रेस नहीं हो पा रही है। ऐसे में कई अधिकारी सरिस्का पहुंचे और उन्होंने ग्रामीणों के साथ बैठक ली। उन्होंने टाइगर की तलाश के लिए ग्रामीणों से मदद लेने का ऐलान किया।

- एस.टी.-13 को ढूंढने के लिए अधिकारियों ने 100 लोगों को जंगल में उतार दिया है। सौ लोगों की 30 टीम बाघ की तलाश कर रही हैं।

टाइगर एसटी-13 सरिस्का सेंचुरी का सबसे ताकतवर टाइगर माना जाता है। जंगल में सबसे बड़ी टेरेटरी इसी टाइगर की थी। इस टाइगर की 4 टाइग्रेस से मेटिंग हो चुकी थी। टाइगर के शिकार की भी आशंका जताई जा रही है।

सरिस्का बाघ परियोजना के फील्ड

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'प्लॉट नहीं न्याय चाहिए'

अलवर 5 फरवरी (निसं)। मूकबधिर नाबालिग बालिका के लहुलुहान मिलने के मामले का अभी तक खुलासा नहीं कर सकी है। इधर, सरकार व पुलिस प्रशासन के खिलाफ विरोध के स्वर लगातार जारी हैं। शुक्रवार को भाजपा के कार्यकर्ताओं ने अपने खून से लिखा कि ''पीड़ित परिवार को प्लॉट या जमीन नहीं न्याय चाहिए''। कई कार्यकर्ताओं का सीरिंज से खून निकाला गया और फिर एक बड़े कागज पर मुख्यमंत्री के नाम संदेश लिखा गया।

- भाजपा कार्यकर्ताओं ने सिरिंज से खून निकालकर बड़े कागज पर मुख्यमंत्री के नाम संदेश लिखा।

अलवर शहर में शहीद स्मारक के सामने विरोध प्रदर्शन जारी है। भाजपा के कार्यकर्ताओं ने 4 दिन पहले कलैक्टर के निवास पर लिखा था कि 'सरकार की दलाली मत करो-प्लॉट नहीं न्याय चाहिए'। उसके बाद कई कार्यकर्ताओं के खिलाफ राज कार्य में बाधा डालने का मुकदमा दर्ज हो चुका है। उसके बाद अब उन्हीं कार्यकर्ताओं ने खुद के खून से ''बेटी को न्याय दो। प्लॉट या जमीन नहीं''।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या भाजपा अपने शहरी वोट कांग्रेस के पक्ष में ट्रांसफर करेगी?

नवीनतम सर्वे के अनुसार आप, कांग्रेस से आगे है पंजाब में

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 फरवरी। ऐसी आशा की जा रही है कि राहुल गांधी पंजाब के आसन्न विधान सभा चुनावों में पार्टी के मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में चरणजीत सिंह चन्नी के नाम की घोषणा करेंगे।

चन्नी वर्तमान मुख्यमंत्री हैं जिनका चयन राहुल गांधी ने पार्टी को नेतृत्व प्रदान करने के लिये उस समय किया था, जब कैप्टन अमरिन्दर सिंह राज्य के मुख्यमंत्री पद से हटाये गये थे।

राहुल कल पंजाब में एक वर्चुअल सभा को सम्बोधित करेंगे, जहाँ उनसे इस घोषणा की अपेक्षा की जा रही है।

जहाँ, पार्टी यह मानकर चल रही है कि राज्य के दलित वोट, जो कुल मतदाताओं का 34 प्रतिशत हैं, उसकी तरफ आ जायेंगे, वहीं, यह बात भी उल्लेखनीय है कि, चन्नी दो सीटों से चुनाव लड़ रहे हैं तथा बड़े जोर-शोर से डेरों को अपनी ओर लाने का प्रयास कर रहे हैं। ज्ञातव्य है कि दलितों के बहुत बड़े वर्ग पर इन डेरों का अच्छा-खासा प्रभाव है।

- पर, आर.एस.एस. का सोच है कि, सीमा पर स्थित संवेदनशील राज्य में आम आदमी पार्टी की सरकार होना देश के हित में नहीं है। संघ के इस सोच का भाजपा पर काफी प्रभाव पड़ा है, अतः शहरी वोट ट्रांसफर करने की बात उठी है।
- इसके अलावा पंजाब के बड़े-बड़े सिख घराने भी चन्नी को जिताना चाहते हैं, सिद्धू के मुकाबले। इन घरानों में प्रमुख है, बादल, मजीठिया, अमरिन्दर सिंह।
- जैसा कि विदित ही है, यह भी आम चर्चा है कि, राहुल गांधी कल रविवार को एक वर्चुअल रैली में कांग्रेस की ओर से मु.मंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करेंगे।

चतुष्कोणीय संघर्ष होने के कारण, जहाँ पंजाब की स्थिति स्पष्ट नहीं है, फिर भी ऐसी अपेक्षा की जा रही है कि कल की मुख्यमंत्री चेहरे की घोषणा के बाद, स्थिति काफी कुछ स्पष्ट हो जायेगी तथा यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि, ताकतवर तथा दबदबा रखने वाले जाट सिख एक दलित मुख्यमंत्री के प्रति क्या रूख अपनाएंगे।

अभी तक की रिपोर्टों का मानना है कि, आम आदमी पार्टी मतदाताओं के रूख के हिसाब से सबसे आगे है। लेकिन सूत्रों का कहना है कि आर.एस.एस. ने भाजपा से यह सख्ती से कह दिया है कि पंजाब जैसे संवेदनशील सीमावर्ती राज्य में आम आदमी पार्टी की सरकार होना देश के हित में नहीं है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका चीन की धमकी के सामने झुका

चीन ने धमकी दी कि, अगर अमेरिका ने ''विन्टर ओलम्पिक्स'' का राजनीतिकरण करने की कोशिश की तो, अमेरिका के खिलाफ प्रतिशोधात्मक कार्यवाही चीन भी कर सकता है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5फरवरी। बीजिंग में आयोजित हो रहे विन्टर ओलम्पिक्स के राजनीतिकरण के अमेरिका के कथित प्रयासों के बाद चीन उसे अपनी ताकत के बल पर झुकाने में कामयाब रहा है।

राजनीतिक रंग में रंगे बीजिंग ओलम्पिक्स की शुरुआत के कुछ ही घंटों के बाद, अमेरिका की हाउस स्पीकर नैन्सी पेलोसी ने अमेरिका के ओलम्पिक एथलीट्स से शुक्रवार को अनुरोध किया कि वे चीन की सरकार के खिलाफ कुछ ना बोलें।

वाइट हाउस ने गत दिसम्बर माह में घोषणा की थी कि, वह चीन के मानवाधिकार रिकॉर्ड को देखते हुए बीजिंग में अपने कूटनीतिज्ञ नहीं भेजेगा, तथापि अमेरिका के एथलीट्स वहां जा सकेंगे और उन्हें सरकार का पूरा सहयोग मिलेगा।

वाइट हाउस की प्रैस सचिव जैन साकी ने एक माह पूर्व ही घोषणा की थी कि, अमेरिका बीजिंग ओलम्पिक्स के ''धूम-धड़ाके'' में भाग नहीं लेगा। बीजिंग के इन, ''2022 गेम्स'' में अपना आधिकारिक प्रतिनिधिमण्डल ना भेजकर अमेरिका को उम्मीद थी कि इससे बीजिंग को एक स्पष्ट संदेश मिलेगा।

- अमेरिका में कैलिफोर्निया की डैमोक्रैट, सीनेटर पेलोसी ने भय जताया कि, अगर अमेरिकी एथलीट्स ने चीन के मानवाधिकार की अवहेलना के बारे में ज्यादा बयानबाजी की तो, अमेरिकी एथलीट्स की सुरक्षा को खतरा हो सकता है। यह बात काफी प्रमुखता से वॉशिंगटन टाइम्स में छपी है।
- आर्कनसा के सीनेटर, टाम कॉटन ने भी सीनेटर पेलोसी के वक्तव्य का समर्थन किया।
- विदेश मंत्रालय से सम्बद्ध समिति ने भी यह आशंका जतायी है।
- जैसा कि विदित ही है, वाइट हाऊस के प्रैस सैक्रेटरी जैन साकी ने एक महीने पहले ही बड़ा भारी व्यक्तव्य दिया था कि, अमेरिका विन्टर ओलम्पिक के धूम-धड़ाके में शामिल नहीं होगा तथा ऑफिशियल प्रतिनिधि मण्डल नहीं भेजेगा। पर अमेरिकी एथलीट्स व कोच, अपनी बात कहने को स्वतंत्र होंगे तथा उन्हें अमेरिका की सरकार का पूर्ण समर्थन प्राप्त होगा।
- पर, अब अमेरिका अपने एथलीट्स को चीन की ज्यादा आलोचना करने के लिए नहीं उकसा रहा, और सलाह दे रहा है कि, अपनी सुरक्षा का ध्यान रखें।

वॉशिंगटन टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, कैलीफोर्निया से डैमोक्रेट पार्टी की सीनेटर, पेलोसी ने अब कहा है कि उन्हें एथलीट्स की सुरक्षा को लेकर भय था कि, कहीं वे चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की आलोचना वाला कोई बयान ना दे दें।

उन्होंने कहा कि, ''मैं उन्हें वहां चीन की सरकार के खिलाफ बोलने को प्रोत्साहित नहीं कर रही हूँ, क्योंकि यदि वे ऐसा करते हैं तो मैं उनकी सुरक्षा को लेकर चिंतित हूं, मैं उम्मीद करती हूं कि, वे मानसिक व राजनैतिक व अन्य किसी भी तरीके से सकुशल हैं।''

अमेरिकी राजनेता चीन के वीगर अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न और मानवाधिकारों के उसके खराब रिकॉर्ड के कारण बीजिंग की पेलोसी लगातार आलोचना करते रहे हैं।

पेलोसी ने कहा, ''हम विन्टर ओलम्पिक्स के कूटनीतिक बायकॉट के लिए राष्ट्रपति को सैल्यूट करते हैं, जिसमें अन्य देश भी शामिल हुए, इस रूख का मैं समर्थन करती हूँ।'' मानवाधिकार उल्लंघनों और ओलम्पिक में भाग लेने वाले एथलीट्स के सुरक्षा जोखिम को लेकर रिपब्लिकन्स कई महीनों से इन खेलों के पूर्ण बायकॉट की मांग करते रहे हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वैक्सीन का झमेला

- जाल खंबाता -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 फरवरी। यह केवल भारत में ही हो सकता है कि, केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के 20,162 निवासियों को कोविड-19 वैक्सीन की प्रथम खुराक से पहले, दूसरी खुराक दे दी गई।

यह डेटा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की सरकारी वैबसाइट से प्राप्त हुआ है, जिसमें पहली खुराक की एक निश्चित अवधि के बाद दूसरी खुराक देना बताया गया है।

- जम्मू कश्मीर में 20,162 व्यक्तियों को पहली डोज़ से पहले दूसरी डोज़ लगी।

उक्त वैबसाइट दर्शा रही है कि, 4 फरवरी को दूसरी खुराक लेने वाले लोग 98,84,299 थे, जबकि पहली खुराक लेने वाले 98,64,137 ही थे।